Date
Page

Sociology Sem - I Paper - 2

Society, Culture and Social change

Unit - I

Societies: Types and characteristics Tribal Rural, Urban, Industrial and Post-Industrial.

Unit - II Definition and Nature Types — Material and Non — Meterial, Socialization its importenece.

Unit - III: Social processes of Social change characteristic features of industriazation Modernization, Globalization and Secularization "

Unit - IV Social stratifications: Concept and Bases: forms - Cast, class, Power & Gender Readings:

Q. छोटानागपुर क्षेत्र की जनजातियों तथा और जनजातियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके पारस्परिक संबंधों का वर्णन करें?

झारखण्ड राज्य का पुरा क्षेत्र सारे विश्व में अपने खनिज पदार्थों के लिए प्रसिद्ध है। साथ ही साथ यह भारत के प्राचीन निवासियों और आदिवासियों का निवास स्थान भी है। झारखण्ड राज्य पहले बिहार के साथ जुड़ा हुआ था और उसका दक्षिणी भाग छोटानागपुर के नाम से सुप्रसिद्ध है। आज यही छोटानागपुर झारखण्ड राज्य के नाम से भारत के मानचित्र में देखे जा सकते हैं। छोटानागपुर का यह पठार बड़ा हरा-भरा है। इस पठारी क्षेत्र के निकट संथाल परगना क्षेत्र भी है, छोटानागपुर क्षेत्र की अपनी विशेष संस्कृति और महत्व है, यहां की धरती के गर्भ में विभिन्न खनिज पदार्थों की अतुल्य संपदा के भंडार हैं, तथा पुरा क्षेत्र घने जंगलों से आच्छादित है। इन पहाड़ियों में जंगली पशुओं का निवास स्थान भी है। जब उत्तरी-भारत को समतल तथा उर्वरभूमि पर आर्य और अन्य लोगों ने आधिपत्य स्थापित कर लिया तब भारत के प्राचीन निवासी इस पठारी क्षेत्र में बस गये।

1991 ई० की जनगणना के अनुसार बिहार में जनजातियों की जनसंख्या 66 लाख 16 हजार ~~914~~ 14 था। जो बिहार राज्य की कुल जनसंख्या का लगभग 7.66% है। भारत में रहने वाले आदिवासियों की संपूर्ण जनसंख्या में बिहार एवं झारखण्ड की जनजातियों एक-चौथाई है। अधिकांश जनजातियाँ झारखण्ड के छोटानागपुर पठार - रांची, हजारीबाग, धनबाद, सिंहभूम, पलामू, गुमला, गिरिडीह तथा संथाल परगना में पाये जाते हैं।

मुण्डा, संथाल, हो, बिरहोर और खड़िया मुण्डारी
बोली बोलते हैं। उरांव लोग द्रविड़ भाषा
जैसी बोली बोलते है सांस्कृतिक दृष्टि से
भी यदि देखा जाये तो भी इसमें अनेक
प्रकार की भिन्नतायें मिलती है बिरहोर
तथा पहाड़ी खड़िया लोग अब तक जंगल के
पशुओं तथा फलों पर ही अपना जीवन
गुजारते है असुर, कोरवा तथा पहाड़ी खड़िया
झूम की खेती करते है ये लोग सामान्य
बंजारा लोगों के समान एक स्थान से
दूसरे स्थान पर अपने निवास स्थान बदलते
रहते है इन लोगों से बिल्कुल ही भिन्न
मुण्डा, संथाल, हो उरांव और खड़िया
लोग है, जो स्थायी निवास बनाकर रहते
है कृषि ही इन लोगों का प्रमुख व्यवसाय है
भौतिकवादी संस्कृति में भी यह लोग काफी
उन्नत है उनके अच्छे मकान तथा गाँव है
कुछ ऐसे भी परिवार है जिनमें शिक्षा की
व्यापक रूप से प्रसार हुआ है, उनके
परिवार में डॉक्टर, नर्स अध्यापक तथा
अन्य सरकारी कर्मचारी लोग भी है
जन-जातियों के ईसाई बन जाने से इनकी
आर्थिक तथा सांस्कृतिक अवस्था बहुत ही
अच्छा है इस क्षेत्र के ग्रामों में विभिन्न जो
जनजातियाँ तथा अन्य जातियों के लोग ही
एक साथ रहते हैं। कुछ गाँव भी ऐसे हैं
जहाँ शत-प्रतिशत केवल आदिवासी लोग ही
है अधिकांश बड़े गाँवों में जनजातियों के
साथ ही साथ लोहार, बढ़ई, जुलाहे, धोबी
इत्यादि लोग भी रहा करते है एक जन-
जातिय गाँव में लोगों के बीच स्नेह
प्रेम तथा जनतांत्रिक विचार पाये जाते
केवल वालों के बीच भेद भाव कम ही

झारखण्ड राज्य अलग होने के बाद कुछ जन जातियों की संख्या बिहार राज्य में ही स्थापित हो गये। शाहाबाद के सासाराम तथा भभुआ क्षेत्र में और भागलपुर, मुंगेर पूर्णिया और चंपारण मे भी कुछ जनजातियां निवास करती है। झारखण्ड के प्रमुख जनजातियों में मुण्डा, उराँव, हो, संथाल, खड़िया, पहाड़िया और बिरहोर प्रमुख हैं। ये जनजातिया केवल गैर आदिवासियों से ही भिन्न नही है बल्कि आपस में एक-दूसरे से भी नस्ल, सामाजिक-संगठन, भाषा, अर्थव्यवस्था तथा संस्कृति में भिन्न है। ऐसी भी कुछ जनजातिया है, जो भाषा तो एक ही बोलती है किन्तु आर्थिक दृष्टि से एक-दूसरे से काफी भिन्न है।

इसी प्रकार कुछ ऐसी भी जनजातिया है, जिनकी अवस्था तो समान है। किन्तु उनकी बोली और सामाजिक संगठन में भिन्नता है। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसी भी जनजातिया है जिनका न तो कोई स्थाई निवास स्थान है और न कोई स्थायी का आय का साधन है ये लोग भोजन की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकते फिरते है और इस प्रकार इनके रहन-सहन में भी परिवर्तन होता रहता है। संथाल, मुण्डा तथा उराँव ऐसी जनजातिया है जिनके पास खेती के लिए पर्याप्त भूमि है और रहने के लिए 2-3 कोठरियों के मकान भी है। उनके परिवार तथा गाँव है उनके गाँव छोटे बड़े सब प्रकार के है उनकी अपनी बोली है, तथा अपना साहित्य भी है। भाषा के आधार पर हम इन आदिवासियों को 2 भागों में बाँट सकते है।

झोपड़ियाँ ही हुआ करती हैं, बिरहोर लोगों के मकान मे एक कोठरी होती है, किन्तु हो तथा मुण्डा लोगों के मकानों में 3 कोठरिया होती है, ये मकान कुछ बड़े हवादार तथा अच्छे ढंग के होते हैं। मकानों का ढंग उनके सांस्कृतिक स्तर को स्पष्ट रूप से प्रकट करता है उन्नत जनजातियों के मकान अच्छे और बड़े होते है। सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े हुऐ जैसे- बिरहोर, माल पहाड़ियों आदि की झोपड़िया तथा एक कोठरी की होती है हो लोगों के मकानों के सामने तरकारी उपजाने के लिए थोड़ी भूमि हुआ करती है अधिकांश मकान मिट्टी के होते है मकान के एक किनारे पर पूर्वजो के दैवी स्थान होते है जिन्हे ये लोग अपनी भाषा मे आदिंग कहते है। अधिकांश आदिवासियों के गाँव मे अखाड़े हुआ करते है जहाँ ये लोग प्रत्येक दिन सांध्या समय गाते तथा नाचते है फिर कुछ गाँवो मे सासन भी होते है जो गाँव के श्मशान घाट होते है और जहाँ उनके पूर्वजो की हड्डियाँ गड़ी हुई होती है इसी प्रकार गाँव के देवताओं के लिए स्थान होते है यहाँ पर गाँव के देवी देवताओं की पूजा की जाती है उराँव लोगों के गाँवों धुमकुरिया नामक संस्था हुआ करती है जहाँ युवक रात मे रहा करते है कही - कही लड़को तथा लड़कियों के लिए अलग - अलग धुमकुरिया होते है किन्तु कुछ गाँवो मे एक ही साथ युवक समाज के प्राचीन अनुभवों, पूर्वजो की कथानिया तथा विभिन्न गानो एवं लिपियों को सीखते है। इन जनजातियों मे अपनी जनजाति के सदस्यों के साथ दूसरे जनजाति के लोग, बाहरी

होता है। इस समाज में व्यक्तियों के मध्य वर्गीकरण भी नहीं है। पंचपरगना के मुण्डा और गोलघाट के हो लोगों को छोड़कर आदिवासियों में साधारणतः ऊँच-नीच का भेद नहीं है। इन जनजातियों के आर्थिक व्यवहार में लाभ-अर्जन वृत्ति नहीं होती।

इन जनजातियों की एक प्रमुख विशेषता इनमें सहकारिता की भावना का होना बहुत से कार्य ये सामूहिक रूप से सम्पन्न करते हैं। मुण्डा, उरांव, हो तथा संथाल आदि ग्राम वासियों में आर्थिक निकटता के संबंध पाए जाते हैं, जैसे- पशुचारण, स्थानान्तरित कृषि सभी ग्राम वासी मिल-जुलकर करते हैं। श्रमदान का आदान-प्रदान भी कई प्रमुख जनजातियों में प्रचलित है। उरांव, मुण्डा, हो, खड़िया अपने कृषि उपकरणों को 'अदला-बदली' लोहार से करते हैं। उपकरणों के बदले वे अनाज देते हैं। विभिन्न जनजातियों के गाँव भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। अधिकतर इनके गाँव जंगलों के समीप होते हैं। इन जंगलों से ये लोग लकड़िया एवं रस्सी को लाते हैं और जानवरों का शिकार भी किया करते हैं। अधिकांश जनजातिया आज भी जंगल से अधिक लाभ उठाता है। इनके गाँव साधारणतः किसी झरने या नदी के किनारे किसी ऊँचे स्थान पर स्थित हैं। बड़े-बड़े गाँवों में 80 या इससे भी अधिक झोपड़ियाँ होती हैं। मुण्डा, संथाल, उरांव और हो लोगों के गाँव बड़े हुआ करते हैं। किन्तु बिरहोर, माल पहाड़िया, सौर्या पहाड़ियों आदि जनजातियों के में अधिक से अधिक केवल 12

Q. नगर की अवधारणा को स्पष्ट करते हुये नगर की विशेषताओं की विवेचना करे।

Ans. नगर से व्यक्ति परिचित होता है उसमें चहल-पहल, भीड़-भाड़, प्रचुर मात्रा में यातायात और संदेश वाहन के साधनों का जाल बिछा होता है। व्यवसाय, वाणिज्य और मनोरंजन के केंद्र होते हैं शिक्षा, धर्म, व्यवसाय की अनेक संस्थाऐ होती है एक बहुत बड़ी जनसंख्या नगरों में निवास करती है व्यक्तियो के बीच औपचारिक स्थापन होते है बल्कि बड़े-बड़े नगरो में व्यक्ति एक-दूसरे को पड़ोस में रह कर जान ही नही पाता। इन अनेक विशेषताओं के होते हुए भी नगर को परिभाषित करना सरल कार्य नही है इसलिए बर्गेल ने लिखा है कि- "यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति यह जानता है कि नगर क्या है, किन्तु कोई भी इसकी संतोषजनक परिभाषा नही दे सकता है। अतः नगरीय समाजशास्त्र में नगर की व्यवस्था अनेक दृष्टि से की जाती है ये दृष्टिकोण निम्नलिखित है-

1. कानूनी दृष्टिकोण के अनुसार, नगर वह स्थान है, जहाँ एक निश्चित जनसंख्या निवास करती है, और एक निश्चित सीमा के अंतर्गत नगरपालिका सरकार द्वारा प्राप्त अधिकारो का प्रयोग करते है इस प्रकार नगर एक शासकीय ईकाई है परिस्थितिक के आधार पर नगर को एक प्राकृतिक तथा सामाजिक ईकाई कहते है

2. परिस्थितिक दृष्टिकोण के मतानुसार नगर का अर्थ उस स्थान से है, जहाँ एक विशेष प्रकार का प्राकृतिक परिवेश विद्यमान है, परिस्थितिक व्याख्या शिकागो स्कूल के नाम से जानी जाती है पार्क और मैकेन्जी आदि

जातियों के साथ परस्पर निर्भरता के कार्यात्मक संबंध मिलते है एक ही गाँव में बसने वाली में विभिन्न जातियां एवं जनजातियां परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर है यथा यथा पहाड़ियाँ अन्न के लिए संथालों पर संथाल वन्य सामग्री तथा जलावन के लिए पहाड़ियों पर निर्भर है असुर हल के बदले उरांव से चावल और चिक बड़ाइक से कपड़ा प्राप्त करता है।

उपर्युक्त विवेचनाओं के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत के मानचित्र में जनजातियों की जनसंख्या का घनत्व सबसे अधिक झारखण्ड राज्य में है झारखण्ड राज्य के अंतर्गत बहुत सी जनजातियां निवास करती हैं और यह अपने परम्परागत तौर से आर्थिक एवं सांस्कृति कार्यों को सम्पन्न करती है। इन जनजातियों को देखते हुए सबसे झारखण्ड राज्य अस्तित्व में आया है। तब से यहाँ के मुख्य मंत्री कोई आदिवासी ही होते है। औद्योगिकरण एवं नगरिकरण इस क्षेत्र में और जनजातियों एवं जातियों कि संख्या कम नही है। पर दोनों के बीच सम्बन्ध जोरदार पूर्ण है।

की जाती है, ~~इस~~ इसपेगलर, मोमफर्ड, ब्युरिए
आदि के नगरों की व्याख्या ऐतिहासिक दृष्टि
से की है, जबकि ब्रेव के सभ्यता के विकास
पर अधिक बल दिया है. इसका मत है
कि सभ्यता के विकास का नगर के संबंध
में किया जाना चाहिए। नगर के बारे में
कुछ विद्वानों ने अपनी राय देने का प्रयास
किया है जैसे- विलकॉक्स का मत है कि
गाँव और नगर का मौलिक अन्तर कृषि
और अन्य उद्योगों के समूहों में अन्तर है।
प्रत्येक नगर की अपनी एक
पहचान है, और कुछ विशेषताएं जिनके द्वारा
अमुक नगर पहचाना जाता है जैसे- आगरा,
लखनऊ, इलाहाबाद, वाराणसी आदि ये सभी
नगर है सामान्यतः नगरों की कुछ सामान्य
विशेषताएँ है जो प्रत्येक नगर में सरलता से देखी
जा सकती है।

1. गैर कास्तकारी व्यवस्था →

नगर की महत्वपूर्ण
विशेषता यह है कि, वहाँ कृषि व्यवसाय नहीं होता
है, इसी के आधार पर गाँव और नगर
मुख्यतः विभाजित होते है, कृषि व्यवसाय ग्रामीण
जीवन का मुख्य आधार है सम्पूर्ण ग्रामीण
अर्थव्यवस्था इसी पर आधारित है नगर
के व्यक्तियों के जीविका उपार्जन के साधन
नौकरी अथवा किसी उत्पादन का कार्य होता
होता है इस तरह नगरीय जीवन का आधार
गैर काश्तकारी पेशा है

(ii) जनसंख्या का घनत्व →

नगरों में प्रति वर्ग
किलोमीटर जनसंख्या का घनत्व ग्रामीण क्षेत्र से कहीं
अधिक होता है. नगरीय व्यवसायों को जिनके
सीमित स्थान में सम्पन्न किया जाता है।

है कि - " नगर का अर्थ किसी स्थान पर स्थित एवं संगठित इकाई से है जिसके विकास के अपने अलग नियम हो।

3.) जनसंख्यात्मक दृष्टि से भी नगरो को परिभाषित करने का प्रयास किया जाता हो किसी स्थान विशेष को नगर कहने के लिए जनसंख्या का आधार लिया जाता है। जैसे कस्बे के लिए कम से कम 5000 जनसंख्या आवश्यक हो इस प्रकार अमेरिका मे 2,500 या इससे अधिक जनसंख्या वाले स्थान को रखने मे अनुशंसा की जाती हो इस प्रकार भारत मे 1 लाख या इससे अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्रों को नगर का नाम दिया जाता हो जनसंख्या के आधार पर की गई परिभाषा भी सभी देशो और क्षेत्रों मे समान रूप से लागु नही होती। अतः यह सार्वभौमिक परिभाषा होने का दावा नही कर सकता हो फिर भी अधिक संख्या का किसी स्थान पर जमा नगर की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। और इस जनसंख्या मे विभिन्न जाति, धर्म, संप्रदाय तथा प्रजाति के व्यक्ति होते हो जिनकी अपनी भाषा, धर्म, रहन-सहन, खान-पान, परम्पराये रीति-रिवाज और मुल्य होते हो अतः नगर की प्रकृति मे विषमीकरण की विशेषता समाहित होती है।

4.) ऐतिहासिक और तुलनात्मक दृष्टिकोण के अनुसार भी नगर को परिभाषित करने का प्रयत्न किया गया हो ऐतिहासिक दृष्टि से नगर की व्याख्या सभ्यता के विकास के संदर्भ मे की जाती हो तुलनात्मक दृष्टिकोण के अनुसार नगर की व्याख्या वृहत परम्परा के सामाजिक, संगठन के स्वरूप

क्योंकि नगरीय जीवन में रहने वाले लोगों का जीवन काफी व्यस्त होता है यही नहीं बल्कि वह किसी विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिए ही औपचारिकताओं को पूरा करता है दूसरी बात यह है कि यहाँ लोगों में समूहवाद नहीं होता यहाँ की जिन्दगी व्यक्तिवादिता से भरी हुई है और व्यक्ति सिर्फ अपने लिए जीना चाहता है और अपने स्वार्थ को ही पूरा करने की चेष्टा करता है

(vi) आन्तरिक संगठन →

प्रत्येक नगर का एक आन्तरिक संगठन भी होता है जो नगर के स्वरूप को उजागर करती है, एक नगर छोटे-बड़े क्षेत्रों में विभाजित है, प्रत्येक क्षेत्र की अपनी कुछ विशेषताएं होती है जैसे औद्योगिक क्षेत्र, क्रय-विक्रय के क्षेत्र, व्यवसायिक क्षेत्र, मनोरंजनात्मक क्षेत्र, शिक्षा संबंधी क्षेत्र, विभिन्न कार्यालय आदि इन विभिन्न क्षेत्रों को यातायात के साधनों से एक-दूसरे से जोड़ा जाता है यहाँ पर सामान्य जीवन की पद्धति होती है क्योंकि किसी भी दफ्तर, कार्यालय, व्यवसायिक क्षेत्र आदि की एक नियमावली होती है जिसके फलस्वरूप उनके समय सारणी में एक निश्चित नियम होते है

(vii) आवासीय स्थायित्व →

नगरों में बाहरी का केन्द्र स्थल नहीं होता यहाँ के व्यक्तियों का स्थायी आवास मकान होता है यदि कोई व्यक्ति मकान छोड़कर जाता है तो उसमें अन्य लोग आ जाते है इसी प्रकार नगर में मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर, स्कूल-कॉलेज, विभिन्न उद्योग

अतः कम स्थान पर कृषि करना असम्भव है। इसके अतिरिक्त गाँव दूर-दूर बसे होते जिनकी आबादी भी कम होती है, जबकि नगर में मुहल्ला और कॉलोनी पास-पास होती है जिनमें लाखों व्यक्ति साथ रहते हैं।

(iii) जनसंख्या और नगर का विस्तार →

समय के साथ नगरों में औद्योगिकरण एवं व्यवसाय में लगातार बढ़ोत्तरी होती है, जिनमें नगरों कि संख्या में निरन्तर वृद्धि होती है मनुष्य नगर में सभी कि सुविधा इतनी नहीं होती है, कि बढ़ती हुई जनसंख्या को अपने मे रख सकें। अतः नगर के बाहर नये-नये कॉलोनी का निर्माण किया जाता है।

(iv) जनसंख्या में विविधता →

कोई भी नगर जहाँ कोई ऐसा सम्प्रदाय नहीं होता जो वहाँ निवास नहीं करता क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र से लोग रोजी-रोटी के संबंध मे नगर एवं महानगर की ओर पलायन करते हैं जिसके फलस्वरूप किसी भी नगर के विभिन्न प्रांत के विभिन्न क्षेत्र के लोग नगर में जाकर बस जाते हैं इस क्षेत्र मे सभी सम्प्रदाय के लोग होते ही हैं साथ ही साथ जाति के आधार ~~सभी उच्च वर्ग के~~ और नगरों में निम्न, मध्य तथा उच्च वर्ग के लोगों का सम्मिश्रण होता है। इस आधार पर यही कहा जा सकता है कि नगरों में विविध प्रकार की जनसंख्या पाई जाती है।

(v) सामाजीक संबंधों का नगरीय स्वरूप →

किसी भी नगर में व्यक्ति एवं समूह के बीच मात्र औपचारिक सम्बंध पाया जाता है यहाँ पर औपचारिकतायें पुरी हुई तत्पश्चात संबंध विच्छेद भी हो गया।

सभी प्रकार के व्यवसाय पाये जाते है यहाँ पर विभिन्न प्रकार की संस्थाएँ जाल फैलाकर बैठी होती है जहाँ इन्सान मशीन की तरह दौड़-भाग करते नजर आते है नगरों में विभिन्न प्रकार की शिक्षण संस्थाएँ मनोरंजनालय केन्द्र तथा स्वास्थ्य के अच्छे केन्द्रों की स्थापना की जाती है। यहाँ लोगों के बीच मात्र औपचारिक संबंध पाये जाते है तथा कानून को छोड़कर सभी रूढ़िवादी तरीके दूर नजर आते है।

चिकित्सालय और व्यवसायिक कार्यालय आदि होते हो इन्हे एक जगह से दूसरी जगह लेकर से हस्तान्तरित नही किया जा सकता है इस तरह नगरीय समुदाय एक स्थान मे स्थायी रूप से निवास करता है।

(viii) नगरीय आर्थिक क्षेत्र मे विभिन्नता →

नगर विभिन्नताओ का केन्द्र है यहां ऊंची - ऊंची इमारते नगर के वैभव की कहानी कहती है। 5 star होटल नगर की विलासिता का द्योतक है बंगलो और महलो के वातावरण, वातानुकूलित कमरे अभिजात्य और उच्च व्यवसायिक वर्ग की प्रतिष्ठा का संदेश देते है सड़को पर दौड़ती कारे धनी नगर का परिचय देती है इसके विपरीत गन्दी बस्तियाँ भी है जो इस बस्ती को नर्क जहाँ पशु भी रहना पसन्द नही करेगा भूख से पिचके हुऐ पेट युवा अवस्था मे उभरे हुऐ गाल की हड्डियाँ नगर की गरीबी की दासता कहते है फुटपाथो पर सोने वाले अनगिनत व्यक्ति लू, गर्मी बरसात और जाड़े को अपने उपर ओढ़ते है। दमड़ी तपती सड़क पर ठेला खिंचता हुआ श्रमिक इस नगर की जर्जर आर्थिक व्यवस्था की दस्तक कहता है यह गरीबी और अमीरी की तस्वीर नगरीय आर्थिक ढाँचे की विभिन्नताओ का चित्र प्रस्तुत करती है।

उपर्युक्त विवेचनाओ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि, जब किसी क्षेत्र, यातायात, संचार तथा विभिन्न संस्थाएं व्यस्तता की गति मे चल पड़ता है तब वहां नगर का लक्षण पनपने लगता है। नगर की अवधारणाओ ने यह बात ऊपर ही स्पष्ट हो चुकी है कि, इस क्षेत्र मे खेती की ह्रास

को बताते हुए ... "... यहां की हवा में भी जाति ...
सम्प्रदायों की परम्परात्मक स्थली माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि ...
और यहां तक कि मुसलमान तथा ईसाई भी इससे अछूते नहीं बचे हैं।''

जाति का अर्थ एवं परिभाषा
(MEANING AND DEFINITION OF CASTE)

जाति शब्द अंग्रेजी भाषा के कास्ट 'Caste' का हिन्दी अनुवाद है। अंग्रेजी के Caste शब्द की व्युत्पत्ति पुर्तगाली भाषा के 'Casta' शब्द से हुई है जिसका अर्थ मत, विभेद तथा जाति से लिया जाता है। जाति ... की उत्पत्ति का पता सन् 1665 में **ग्रेसिया-डी ओरेटा** नामक विद्वान ने लगाया। उसके बाद फ्रांस के **अब्बे डुबे** ने इसका प्रयोग प्रजाति के सन्दर्भ में किया। विभिन्न विद्वानों ने जाति को परिभाषित करने का प्रयास कि... है :

मजूमदार एवं **मदान** के अनुसार, जाति एक बन्द वर्ग है।''

कूले के शब्दों में, ''जब एक वर्ग पूर्णतः आनुवंशिकता पर आधारित हो, तो हम उसे जाति कहते हैं...''

इन दोनों परिभाषाओं में इस बात पर जोर दिया गया है कि जाति की सदस्यता जन्म पर आधारि... होती है। कोई भी व्यक्ति अपने गुणों, सम्पत्ति एवं शिक्षा में वृद्धि करके या व्यवसाय परिवर्तन करके जा... नहीं बदल सकता है। व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता है, जीवनपर्यन्त उसी का सदस्य बना रहता है।

सर रिजले के अनुसार, ''जाति परिवारों या परिवारों के समूहों का एक संकलन है जिसका कि सामान्... नाम है, जो एक काल्पनिक पूर्वज—मानव या देवता से सामान्य उत्पत्ति का दावा करता है, एक ही परम्परात्मक व्यवसाय करने पर बल देता है और एक सजातीय समुदाय के रूप में उनके द्वारा मान्य होता है जो अपना ऐसा मत व्यक्त करने के योग्य हैं।'' हट्टन ने रिजले की परिभाषा की आलोचना करते हुए लिखा है कि रिजले ने जाति एवं गोत्र में भेद नहीं किया है। एक काल्पनिक पूर्वज से उत्पत्ति गोत्र की मानी जाती है जाति की नहीं।

जे. एच. हट्टन के अनुसार, ''जाति एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत एक समाज अनेक आत्म-केन्द्रित एवं एक-दूसरे से पूर्णतः पृथक् इकाइयों (जातियों) में विभाजित रहता है। इन इकाइयों के बीच पारस्परिक सम्बन्ध ऊंच-नीच के आधार पर सांस्कारिक रूप से निर्धारित होते हैं।''

केतकर के अनुसार, ''जाति एक सामाजिक समूह है जिसकी दो विशेषताएं हैं—(i) सदस्यता केवल उन व्यक्तियों तक सीमित है जिन्होंने उसी जाति में जन्म लिया हो, और इस प्रकार से पैदा हुए व्यक्ति ही